SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-3, July to September: 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

दिनकर की कविताओं का परिचय

डॉ. लेखा. पी

शोध सार:

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रीय भावना के सशक्त एवं ओजस्वी कवि है। दिनकर का समस्त जीवन संघर्षमय रहा। उनकी काव्य प्रतिभा का परिचय हमें 'हुंकार', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि कविताओं में विद्यमान हैं। उनके व्यक्तित्व में हिमालय की सी विशालता एवं गरिमा है। वे क्रांति और विप्लव का विकल्प लेने वाले भारतीय ग्रामीण जीवन के तेजस्वी कवि थे। १९२९ में उनका पहला काव्य संग्रह 'प्रणभंग' छपा। इसका उल्लेख महाभारत से है जो एक खंडकाव्य है।

"भारत ! तुम्हारे ध्वंस से की,
ये साज सजना को चले,
घनघोर घन आपत्तियों के,
ये गरजने को चल "

दिनकर की कृतियों में 'सामधेनी' कविता संग्रह का प्रमुख स्थान है। 'आग की भीख', 'जवानियाँ', 'साथी', 'दिल्ली और मॉस्को', 'जयप्रकाश' आदि राष्ट्रीय भावना संबंधी कविताएं है। "प्यारे स्वदेश के हित अंगार मांगता हूं" 'आग की भीख' कविता में कवि की याचना है।

मूल शब्द:

तेजस्वी, व्यष्टि, विलक्षण, कारीगरी, संघर्षमयी, पच्चीकारी

मूल आलेख:

'बापू' नामक काव्य गांधी विषयक संबंधी है। इसमें शांति का संदेश प्रकट है। 'इतिहास के आँसू' नामक कविता संग्रह १९५१ में प्रकाशित हुई है। इसमें वर्तमान जीवन कल्पना द्वारा अतीत दर्शन का चित्र उपस्थित करके सुख पाने का प्रयत्न है। 'धूप और धुआं' कविता संग्रह में इकतीस रचनाएं हैं। जीवन की कटुता पर कवि के व्यंग्य इस संग्रह के कविता में मौजूद है। उनकी 'व्यष्टि' कविता में व्यक्तित्व को प्रधानता है। 'भारत' कविता में अतीत से प्रेरणा पाकर गर्व करनेवालों पर व्यंग्य है।

"गांधी को उल्टा घिसो और जो धूल झरे,
उसके पहले से अपनी कुंठा के मुख पर"

इस संग्रह की कविताओं में नया प्रयोग है।

१९५२ में प्रकाशित 'रश्मिरथी' काव्य में प्रबंधात्मकता मौजूद है। यह कुरुक्षेत्र की अपेक्षा सशक्त और जीवन की विविधता के दर्शन भी इसमें पायी जाती है। दिल्ली के प्रति समय समय पर लिखित कविताएं 'दिल्ली' नामक कविता संग्रह में है। दिल्ली पर अन्यायियों के शासन के विरुद्ध दिनकर ने लिखा -

"वैभव की दीवानी दिल्ली,
कृषक - मेघ की रानी दिल्ली,

अनाचार, अपमान, व्यंग्य की
चुभती हुई कहानी दिल्ली" (४)

'नीम के पत्ते' कविता संग्रह में भारत माता का जागरण है। 'चकवाल' का प्रकाशन १९५६ है। दिनकर के काव्यों में इसका प्रमुख स्थान हैं। 'नील कुसुम' कविता संग्रह की कविताएं अच्छी हैं। 'नर्तकी', 'स्वप्न और सत्य', 'व्याल और विजय', 'हिमालय का संदेश' आदि इस संग्रह की कविताएं है।

"हमारा व्यय,
हवा के खेत में कुछ स्वप्न बो देना,
हमारी आय?
अंबर में हजारों फूल खिलते हैं" (५)

कभी-कभी लेखक मानवता के भाग्य पर सोचने को विवश करते हैं। चीन पर भारत का पराजय दिनकर जी को इतना विचलित कर दिया कि वह भारत के शांतिवादी दर्शन पर टूट पड़े और इस क्रोध की मुद्रा में रचे गए काव्य है 'परशुराम की प्रतीक्षा'। इस पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि - "इस कविता में तपन है, ज्वाला है और वर्तमान युग के लिए क्या नहीं है? जैसी गति है वैसी कृति है, वैसा ही दिनकर व्रती है" (६)

१९६४ में 'कोयला और कवित्व' का प्रकाशन हुआ। इस संग्रह की विशेषता है कि इसमें न ओज है, न क्रोध, न श्रृंगार, न मोह। १९६१ में दिनकर जी का उर्वशी का भी निकाला तो हिंदी विश्व पटेल पर इस किताब को लेकर बहुत धूम मच गई। इस कविता में कवि ने जो कारीगरी और पच्चीकारी का प्रयोग किया और यह सैकड़ों विलक्षण पंक्तियाँ इस कविता को श्रेष्ठ स्तर पर ले जाती है।

'चक्रवाल' और 'सीपी और शंख' का प्रकाशन १९५६-१९५७ वर्ष में हुआ है। 'सीपी और शंख' कविता में चीनी, रूसी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेजी आदि आधुनिक कविताओं का अनुवाद प्राप्त हैं। 'आत्मा की आंखें' नामक कविता संकलन का प्रकाशन १९६४ में हुआ। ' हारे को हरिनाम' दिनकर की अंतिम काव्य रचना मानी जाती है। इस कविता के मूल में कवि का पश्चाताप बोलता है। उनके पुत्र की मृत्यु और कुछ तलाश उन्हें मोहभंग की भाषा बोलने के लिए प्रेरित कर रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहे तो दिनकर के व्यक्तित्व में रचनात्मकता एवं सर्जनात्मकता उनकी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा भारतीयों को गौरव, राष्ट्रीय , स्वाभिमान जागरण, देश प्रेम आदि का संदेश देते रहते हैं। अपने काव्य कृतियों के द्वारा ही उन्हें राष्ट्रकवि का गौरव प्राप्त हुआ है। बहुआयामी व्यक्तित्ववाले दिनकर काव्य के साथ आलोचना, निबंध, यात्रावृतांत, , , , रेडियो नाटक आदि के सर्जनात्मक स्तर पर अपना कीर्तिमान रूप स्थापित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) दिनकर - प्रणभंग तथा अन्य कविताएँ – पृ. ३, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८९
२) दिनकर - सामधेनी – पृ.५२, अनुपम प्रकाशन, पटना, संस्करण २००५
३) दिनकर - धूप और धुआँ, पृ ८, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८७
४) दिनकर - दिल्ली – पृ.११-१२, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, छटा संस्करण
५) दिनकर - नील कुसुम – पृ.४३, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९५४
६) कुंदन - दिनकर के काव्य पर भारतीय राजनीति का प्रभाव – पृ.३७, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली - प्रथम संस्करण २०१३